मालिक व मख़्लूक़ (बन्दा)
श्रेष्ठ कौन

?

विचारक- मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ाद्री

तस्ह़ीह़- मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(सदर जमीअ़त पयामे अम्न, लखनऊ)

प्रकाशक-
जमीअ़त पयामे अम्न
टैगोर मार्ग, डालीगंज, लखनऊ-226020, यू० पी० इण्डिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

नाम-	मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन?
लेखक-	मु० मुस्तफ़ा क़ादरी
ज़ेरे निगरानी-	मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
संस्करण हिन्दी-	पहला
पुस्तक संख्या-	**1000**
वर्ष-	**2009**
मूल्य-	**32**
कम्पोज़िंग-	जमीअ़त पयामे अम्न (इरफ़ान अह़मद)

मिलने के पते

१. हाज़ी मखदूम, ताले चाभी वाले, स्टेडियम के पीछे इटारसी, होशंगाबाद, (म० प्र०)
२. जामिया दारे अरक़म मुह़म्मदपुर गौंती, फ़तेह़पुर
३. मकतबः नदविया, नदवा (लखनऊ)
४. मकतबः अशरफ़िया, मुह़म्मद अ़ली रोड (बम्बई)
५. मकतबः अल् फ़ुरक़ान, नज़ीराबाद (लखनऊ)
६. मकतबः अल्ह़सनात (दिल्ली)
७. फ़रीद बुक डिपो (दिल्ली)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ सं०
प्रस्तावना	4
नियम	4
इन्सान और दूसरी चीज़ों में अन्तर	5
इन्सान 'मुस्लिम' रहे या इन्कार करे	5
अल्लाह की मर्ज़ी क्या है?	6
रह़मतुल्लिलूआ़लमीन	7
नबी की मीरास	8
ईमान के दर्जे	8
दअ़वत का अ़मली तरीक़ा	10
बनाने वाला मालिक	10
परमेश्वर की पहचान	11
मालिक कौन	12
बनाई हुई वस्तुएँ मुह़ताज हैं	13
सृष्टि की रचना	20
पति	21
इम्तिह़ान क्या है?	23

प्रस्तावना

मुफ़स्सिरे क़ुर्आन ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी मद्दज़िल्लहुलआ़ली के क़लम से-

मैनेजर 'जमीअ़त पयामे अम्न' व सदर जामिया दारे अरक़म, लखनऊ

पूरी दुनिया को अल्लाह ही ने पैदा किया, वही इस दुनिया का मालिक है, दुनिया की हर चीज़ काम में लगी हुई है, जिस काम के लिए अल्लाह ने उसे बनाया है हर एक के लिए उस मालिक ने कुछ नियम बना दिये हैं, जिनसे बाल बराबर हटना किसी के बस में नहीं है।

पानी के बहने, भाप बन कर उड़ने और ठंड पाकर जम जाने के जो नियम बना दिये गये हैं, वह उनसे बाहर नहीं जा सकते। सूरज, चाँद और तारों के लिए जो नियम हैं धरती से पौधों के ऊगने और उनके बढ़ने और उनके पालने के लिए उनके रब ने जो नियम बना दिये हैं उनके ख़िलाफ़ नहीं कर सकते।

नियम-

इसी तरह हर चीज़ के लिए एक नियम है, जो उनको छोड़ कर अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकते, सब अपने पैदा करने वाले के अधीन हैं, सब उसके हुक्मों पर चलने के लिए मजबूर हैं। इस तरह हम यह कह सकते हैं कि दुनिया की हर चीज़ फ़रमाँबरदार (मुस्लिम) है अर्थात अपने मालिक के अधीन (मुस्लिम) है।

इसी तरह़ इन्सान भी इस दुनिया का एक भाग है उसको भी अल्लाह ने पैदा किया उसके पैदा होने ज़िन्दा रहने और मरने का भी एक क़ानून है। इन्सान इसी क़ानून के अनुसार बढ़ता है पलता है और मर जाता है।

इसका सांस लेना उसी अल्लाह के बनाये हुए क़ानून के अनुसार है। इसका दिल, इसके हाथ-पैर, इसकी आँखें और इसके कान, सब उसी के क़ानून के अनुसार काम करते हैं। इन्सान के यह बस में नहीं कि वह आँखों से सुनने का काम ले सके

या कानों से देखने का काम ले सके अल्लाह ने आँख से देखने के लिए जो क़ानून बना दिये हैं इन्सान उसको तोड़ नहीं सकता है, कि वह सांस लिए बिना ज़िन्दा रह जाए, या हवा के बदले पानी में मछलियों की तरह रहना शुरू कर दे।

इस तरह हम देखते हैं कि इन्सान अपने जीवन के एक बहुत बड़े भाग में अल्लाह के बनाए हुए क़ानून के अधीन है या यह कि वह भी दुनिया की दूसरी चीज़ों की तरह़ प्राकृतिक रुप में मुस्लिम है। परन्तु अपने आचरण का दुरुपयोग से इन्कारी (काफ़िर) बन जाता है।

इन्सान और दूसरी चीज़ों में अन्तर-

अल्लाह ने इन्सान को बुद्धि दी है सोचने और समझने की ताक़त दी है और बहुत सी बातों में यह अख़्तियार दिया है कि चाहे वह माने और चाहे न माने, चाहे अल्लाह के रास्ते पर चले, चाहे न चले वह अल्लाह की दी हुई शक्तियों से अच्छा काम भी ले सकता है और उन्हें बुरे कामों में भी लगा सकता है, चाहे तो अच्छी बातें कह सकता है और चाहे तो बुरी बातें कह सकता है। इसी तरह आँख, कान, हाथ-पैर, से वह भले काम भी कर सकता है और बुरे काम भी कर सकता है।

इंसान 'मुस्लिम' रहे या इन्कार करे-

अर्थात जीवन के इस भाग में अल्लाह ने यह आज़ादी दी है कि वह चाहे उसका मुस्लिम बन कर रहे चाहे मुस्लिम बनने से इन्कार कर दे। इस तरह इन्सान का पैदा होना और ज़िन्दा रहना तो उसी क़ानून के अनुसार होता है जिसे अल्लाह ने बना दिया है वह चाहे या न चाहे उसे अल्लाह के बनाये हुए नियमों के अधीन ही हो कर रहना पड़ता है अर्थात वह मुस्लिम ही पैदा होता है और जहाँ तक उसका अधिकार नहीं है वह मुस्लिम ही रहने पर मजबूर है, परन्तु पैदा होने के बाद जब उसके माता-पिता उसको अल्लाह के हुक्मों पर चलाने लगते हैं कि अब वह जीवन के उन कामों में भी जिनमें उसे कुछ अधिकार दिया गया है उनमें भी वह अल्लाह ही के हुक्मों के अनुसार चले तो वह मुस्लिम हो जाता है।

इसी तरह वह लोग भी जिनके माता-पिता तो उन्हें यह रास्ता नहीं बताते मगर वह बड़े होने के बाद हर बात को आँखें खोलकर देखते हैं और अपनी बुद्धि से काम लेते हैं और यह फ़ैसला कर लेते हैं कि जीवन का वही रास्ता ठीक है जिसमें अपने पैदा करने वाले के हुक्मों पर चला जाए और उसके बताये हुए तरीक़े पर ज़िन्दगी

गुज़ारी जाए, तो यह लोग भी पूरे मुस्लिम होते हैं परन्तु जो लोग अल्लाह के बताये हुए रास्ते पर चलना पसंद नहीं करते और क़ानून को छोड़कर अपना जीवन किसी और तरीक़े पर बिताते हैं वे मुस्लिम नहीं।

अल्लाह की मर्ज़ी क्या है?

सोचने की बात यह है कि मनुष्य को यह कौन बताये कि वह किस रास्ते पर चले और कौन सा रास्ता उचित है और किस रास्ते पर चल कर वह अपने मालिक को राज़ी कर सकता है।

अगर हर मनुष्य अपने से तय कर ले कि अल्लाह की यही मर्ज़ी है तो हर मनुष्य एक अलग ही बात तय कर लेगा फिर मनुष्य को यह बात कौन बताये कि उसके मालिक की मर्ज़ी क्या है, वह किन बातों को पसंद करता है और किन को नापसंद, तो उत्तर मिलेगा कि अल्लाह ही को बताना चाहिए कि उसकी मर्ज़ी क्या है। उसकी मर्ज़ी मालूम होगी उसके द्वारा भेजे गये ज्ञान से, तो हम देखें कि इस समय पूरे विश्व में ईश्वरीय ज्ञान के नाम से कौन-कौन से ग्रन्थ मौजूद हैं और कौन-कौन अपने वास्तविक रूप में हैं, कौन नहीं हैं। तमाम शोध के बाद मेरे अनुसार इस समय पूरे विश्व में क़ुर्आन के अतिरिक्त अपने वास्तविक रूप में कोई ग्रंथ मौजूद नहीं, इस तरह़ यह स्पष्ट हो जाता है कि क़ुर्आन ईश्वरीय ग्रन्थ है तो अब गोया अल्लाह की मर्ज़ी को मालूम करने का हमें साधन मिल गया। अतः जो इस के अनुसार चलेगा वह अपने मालिक की मर्ज़ी के अनुसार चलेगा और जो इसके विपरीत चलेगा वह अल्लाह की इच्छा के विपरीत चलेगा और वह मान्य न होगा।

इस तरह़ हमारे अ़ज़ीज़ दोस्त **जनाब 'मुस्तफ़ा क़ादरी साह़ब'** इन्सानों को उन के मालिक की मर्ज़ी को विभिन्न तरीक़े से समझने की कोशिश करते रहते हैं, उसी की एक कड़ी यह "मालिक व बन्दा श्रेष्ठ कौन?" के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं जिस में इन के पिता जी का बड़ा सहयोग रहता है। अल्लाह पाक क़ुबूल फ़रमाए और ज़्यादा से ज़्यादा हिदायत का ज़रिया बनाए।

वस्सलाम

मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी
(सदर जमीअ़त पयामे अम्न, लखनऊ)

بسم الله الرحمٰن الرحيم

रह़मतुल्लिल्‌आ़लमीन

نحمده ونصلى على رسوله الكريم

ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) को अल्लाह ने रह़मतुल्लिल् आ़लमीन बनाकर भेजा यानी सारे आ़लम के लिए रह़मत बनाकर भेजा। सिर्फ़ मुसलमानों के लिए नहीं बल्कि सारे इन्सानों के लिए आपकी उम्मत को नूबूव्वत वाली ज़िम्मेदारी सौंपी। चूंकि आप (सल्ल०) आख़िरी नबी हैं, आपकी मेहनत का मैदान सारे आ़लम के इन्सान हैं। आप (सल्ल०) के बाद सह़ाबा की मेह़नत का मैदान भी सारे आ़लम के इन्सान, तबाईन, तबे ताबाईन के भी मेह़नत का मैदान सारे आ़लम के इन्सान थे तो फिर हमारा भी मेह़नत का मैदान सारा आ़लम होना चाहिए। हम भी नियत इरादा करे, कुछ जद्दोजेहद करें तो अल्लाह भी हमें इस काम के लिए क़ुबूल कर लेगा।

हम अशरफ़ुल् मख़्लूक़ात हैं तो हमारा काम भी अशरफ़ुल् मख़्लूक़ात वाला होना चाहिए, कारेनुबूव्वत सभी कामों में अशरफ़ है, नमाज़ में हम इसी काम को माँग रहे हैं। नबियों वाला रास्ता नबियों वाले रास्ते पर चला, नबी आये और उन्होंने इन्सानों की रुह़ के अन्दर जो शिर्क और कुफ़्र बन गया था उसे निकाला उसका इलाज किया।

नबी रूह़ानी डाक्टर हैं रूह़ों का इलाज करते हैं जिस तरह़ जिस्मानी डाक्टर बनने के लिए एक कोर्स होता है जिसके पास यह इ़ल्म है उसी से ही सीखा जाता है। अपना इलाज करने से अपनी ज़ात का नफ़ा होता है और दूसरों का इलाज करने से मक़्सद ह़ासिल होता है। इन्सान जब जिस्मानी डाक्टर बनता है तो उसकी नज़र में अपना जिस्म नहीं होता बल्कि वह सोचता है कि अपना इलाज तो करुँगा ही करुँगा बल्कि दूसरों का इलाज भी करुँगा, जिससे पैसा आएगा दुनियावी मस्ला ह़ल होगा।

नबी की मीरास–

उ़लमा अम्बिया के वारिस हैं और वारिसीन को मीरास मिला करती है। नबी की मीरास मार्फ़त वाला इ़ल्म है। उ़लमा अगर सच्चे वारिस हैं तो वह इ़ल्म होना चाहिए और ऐसा अ़मल भी जो नबी से साबित हो। नबी इन्सानों को सही रास्ते पर लाया करते थे उनकी रुह़ का इलाज कर के ईमान में दाख़िल करते थे।

"अम्र बिल् मअ़रूफ़ नहि अनिल् मुन्कर" अच्छी बातों का हुक्म करना और बुरी बातों से रोकना यही काम तो इस उम्मत को दिया गया। सबसे अच्छी बात जिसको बोला जाए वह कलिमा है।

मख़्लूक़ का इन्कार करना ख़ालिक़ से होने को कहना यही अच्छी बात है। वारिस को मीरास कब मिलती है उसमें दो शर्तें होती हैं।

पहली शर्त यह कि वह उसी बाप की सन्तान है, दूसरी बात बाप औलाद से ख़ुश हो।

अगर पहली बात उसी बाप की औलाद ही पाई जाए लेकिन दूसरी बात न हो कि बाप औलाद से नाराज़ हो तो मीरास से ह़िस्सा नहीं मिलता। नबी की मीरास मारफ़त वाला इ़ल्म है, जिससे अल्लाह की पहचान होगी इसानों की इस्लाह़ होगी। लोगों ने मख़्लूक़ को नफ़े और नुक़्सान का ह़क़्दार बना रखा है इसी बात को समझना है कि मालिक को नफ़े और नुक़्सान का ह़क़्दार समझ ले। अगर नबी की बात को उसके मिशन को पूरा करने का इरादा कर ले, तो नबी हमसे राज़ी हो जाएँगे। उनकी मीरास हमें मिल जाएगी हम नियत करें कि ग़ैर मुस्लिम भाईयों को भी सही बात बताएँगे। हमारे ईमान को नापने का पैमाना क्या है?

ईमान के दर्जे–

ईमान के तीन दर्जे बताए गये हैं। पहला तो यह है कि कोई बुरी बात जुल्म की होते हुए देखे और अल्लाह ने उसे ताक़त दी हो तो वह अपने हाँथों से उसे रोक दे। दूसरा दर्जा यह है कि इतनी न हो कि रोक सकें तो ज़बान से उसे बुरा कहें, तीसरा दर्जा यह है कि उसे दिल से बुरा समझें और वहाँ से हट जाएँ।

यही बात दुनिया में भी देखने को मिलती है, कहीं जुआ सट्टा हो रहा हो और आपको ताक़त हो यानी आप पुलिस डिपार्ट के आदमी हैं तो आप उसे अपने हाथों से रोक दें, दूसरे आप में इतनी ताक़त न हो और आप आम आदमी हों तो उस अ़मल को ज़बान से बुरा कहें उसे कह सुनकर ज़बान से रोक दें। तीसरा दर्जा यह है कि आप काफ़ी कमज़ोर थे इतना भी नहीं कर सकते तो दिल में बुरा समझें और उस जगह से हट जाएँ क्योंकि पुलिस का छापा पड़ेगा तो आप को भी ले जाएगी। क़ुर्आन में जहाँ-जहाँ शिर्क के बारे में आया है उसे अ़ज़ीम ज़ुल्म क़रार दिया गया है।

'इन्नशिर्का ल ज़ुलमुन अ़ज़ीम' शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है बुराई है क्या? हम वाक़ई इसे बुराई समझ रहे हैं। हमें जो बता बुरी लगती है उसे दूर करने की तद्बीर करते हैं। रोज़ाना हम कई ग़ैर मुस्लिम दोस्तों से मिलते हैं, क्या हमने कभी उनके बारे में सोचा कि यह बड़ी बुराई शिर्क को लिए हुए है। अपने सामने उसे ज़ुल्म (शिर्क) करते हुए देख रहे हैं। कभी हमारे अन्दर कराहियत पैदा हुई, हमने दिल में उसे बुरा समझा और समझा तो हम ईमान के तीसरे दर्जे में हैं, नहीं समझा तो हमारे ईमान का कौन सा दर्जा है?

यह कलिमा हमारे पास उनकी अमानत है, हमको उन्हें उनकी अमानत देना है। आप (सल्ल०) ने आख़िरी ह़ज के मौक़े पर कहा था कि "जो दीन मुझ तक आया था मैंने आप तक पहुँचा दिया" सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया था या रसूलल्लाह (सल्ल०) न केवल पहुँचा दिया बल्कि उसका ह़क़ भी अदा कर दिया। फिर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, इस दीन को गायबीन तक पहुँचा दो, यह हुक्म क़ियामत तक आने वाले मुसलमानों के लिए है। हमारे पास जो कलिमा है वह उनकी अमानत है जिनके पास यह नहीं है अगर हमने उनको उनकी अमानत न दी तो उनका बहुत बड़ा नुक़्सान होने वाला है आख़िरत उनकी बिगड़ जाएगी हमेशा-हमेशा का घाटा होगा। मैदाने ह़श्र में हम आप (सल्ल०) से मिलेंगे, मुलाक़ात करेंगे। उनकी सबसे पहली बात यही होगी जो दीन (अमानत) मैंने आप को दिया था उसे दूसरों को पहुँचाया। अगर पहुँचाया होगा तो चेहरा खिल उठेगा वर्ना चेहरा शर्म से झुक जाएगा, हमें कलिमे के इ़ल्म को उसके खुलासे को ग़ैर मुस्लिम की रुह़ के अन्दर बैठाना है। यह काम है

इसकी शुरुआ़त हमें अपने दीनी भाईयों से करनी है। इब्तिदा यह होगी और इन्तेहा़ ग़ैर मुस्लिम होंगे, इस उम्मत का वजूद इसीलिए है।

दअ़वत का अ़मली तरीक़ा-

सही़ और ग़लत-दो बाते हैं, या यूँ कहें दो सिद्धान्त, उसूल हैं।

इसे एक मिसाल से समझते हैं हमने एक मोबाइल हा़सिल किया है, सही उसूल यह होगा कि हम उस मोबाइल की क़ीमत उसके बनाने वाले को अदा करें शोरूम के ज़रिये वह क़ीमत उसके बनाने वाले (कम्पनी) के पास पहुँचेगा।

ग़लत यह है कि हम उस मोबाइल की क़ीमत उसके बनाने वाले को अदा न करें और तर्क यह दे कि मोबाइल हमें सहूलियत देगा हमारी बात दोस्तों से कराएगा लिहाज़ा हमारे पास जो कुछ भी क़ीमत इस मोबाइल की है उसे मोबाइल को ही अदा (Pay) कर देंगे क्योंकि मोबाइल बनी हुई रचना है, बनी हुई चीज़ से जो फ़ायदा निकलता है उसके लिए उसके बनाने वाले का श्रेय हक़ दिया जाता है। क्योंकि बनाने वाले ने उसमें ऐसे गुण (सिफ़ात) Properties रखी है, जिसकी वजह से फ़ायदा मिल रहा है।

बनाने वाला मालिक-

अगर बनाने वाले के ख़ालिक (मालिक) अपनी बनी हुई चीज़ में फ़ायदा पहुँचाने के गुण नहीं रखता तो फ़ायदा कैसे मिलता, लिहाज़ा यह ज़मीन, हवा, पानी, सूरज खाने-पीने की चीज़ें फल-फूल, सब्ज़ी, दवाएँ, सभी अल्लाह की बनाई हुई हैं। इसमें हम इन्सानों को अगर फ़ायदा मिल रहा है तो हम उस अल्लाह को जो इसका बनाने वाला है उसे उसकी क़ीमत हक़ श्रेय देंगे यही सही नियम है उसूल है।

सबसे पहले हम उस अल्लाह को पहचाने वह कौन है? किसी भी चीज़ को पहचानना उसके गुणों Commenits से होती है। मिसाल से समझें-मेरे पास मेरे हाथों की उंगली में एक अंगूठी (Ring) है, वह सोने की है, मेरे दोस्त का कहना है कि- वह पीतल की है, इस बात का सही फैसला सुनार करेगा वह उस अंगूठी को उसके केमिकल गुणों से जांचेगा अगर सोने वाले गुण निकले तो

वह सोना है, उसे सभी लोगों को स्वीकार (कु़बूल) करना चाहिए, अगर पीतल वाले गुण निकले तो वह पीतल है।

सारे लोग कहते हैं कि हम भी ईश्वर को मानते हैं, मैं चाहता हूँ कि वह ज़रा अपने ईश्वर को सिफ़ातों (गुणों) से जांच ले वह ईश्वर अजर, अमर, अनन्त, अजन्मा, अविनाशी, अन्तरयामी, निराकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान आदि गुणों सिफ़ातों वाला है।

हर इन्सान चिन्तन करे सोचे कि वह जिसकी इ़बादत कर रहा है या उसके मन मस्तिष्क में जो उसका अराध्य है जिसकी भक्ति कर रहा है अगर उसमें ईश्वर वाले गुण हैं तो वह सही है उसके जीवन का लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति में कामियाबी होगी, निजात (मुक्ति) को पाएगा क्योंकि क़ीमत अदा कर रहा है।

अगर उसके आराध्य (मअ़बूद) में वह सिफ़ात (गुण) नहीं है जो ईश्वर में है:- जैसे-

परमेश्वर की पहचान-

(1) वह जन्म लिया हुआ है उसके माता-पिता हैं तो वह अजन्मा नहीं है अर्थात वह ईश्वर नहीं है।

(2) अगर उसके शरीर की लम्बाई 6 फ़ीट की है अर्थात शरीर सीमित है, निश्चित है तो वह अनन्त नहीं है, वह ईश्वर नहीं है।

(3) अगर उसको मृत्यु (मौत) आ गई तो वह अमर नहीं है अर्थात वह ईश्वर नहीं है।

(4) अगर उसने अपने जीवन में किसी की भी आराधना की है किसी के आगे झुका है, किसी से डरता था तो वह भक्ति करने वाला भक्त हो सकता है अराध्य (ईश्वर) नहीं।

(5) अगर आकार लिये हुए है तो वह निराकार नहीं है, इसलिए वह ईश्वर नहीं है।

जब तक गुणों से हम मालिक को पहचानेंगे नहीं तो फिर क़ीमत जो हम देना चाहते हैं, सही जगह ह़क़्दार को नहीं दे पाएँगे। मोबाइल जो ख़रीदा है या

खरीदना चाहते हैं तो क़ीमत कैश काउन्टर पर उस शोरूम के मालिक को अदा करनी पड़ती है अगर हमने जल्दबाज़ी में किसी शोरूम कर्मचारी या किसी ग्राहक को क़ीमत दे आये तब भी हम मुजरिम दोषी हैं, क्योंकि क़ीमत उसके मालिक को ही अदा करना ज़रूरी है।

इन्सानों से ग़ल्ती क्यों हो रही है? यह इन्सान बचपन से ही ग़ल्ती कर रहा है या हम यूँ कहें कि उसके मन मस्तिष्क में एक ग़लत बात अज्ञानता बन रही है। इन्सान जिस्म और जान (रुह़) दो चीज़ों का मजमूआ़ है जिस्म यहीं रह जाएगा, जान (रुह़) ही साथ जाएगी। जान के अन्दर इ़ल्म ठहरता है या जाहिलियत (अज्ञानता) ठहरती है इ़ल्म के ठहरने पर जान (आत्मा) की Value क़ीमत बढ़ती है।

मालिक कौन–

दुनिया के अन्दर हम देखे जो आत्मा (रुह़) जितना ज्ञान काबिलियत रखती है ऊँचा मर्तबः होता है अगर हमने किसी को प्रशासनिक पद पर बिठाया है तो उसकी क़ाबिलियत ज्ञान के कारण ही शरीर की क़ीमत, आत्मा से, आत्मा (रुह़) की क़ीमत ज्ञान, इ़ल्म से है।

जब हम छोटे थे हमने देखा माँ पाल रही है, क्योंकि दूध पिलाती है उससे हम पलते हैं बड़े होने पर हमने देखा खाने-पीने की चीज़ों से हम पल रहे हैं क्योंकि हमको भूख लगती है हम खाना खा लेते हैं, प्यास लगती है पानी पी लेते हैं, बुख़ार आता है गोली दवाई खा लेते हैं हमारे पलने का तअ़ल्लुक़ इन खाने-पीने की चीज़ों से दिखा, यह खाना-पीना अनाज सब्ज़ी फल फ्रूट ज़मीन से उगते हैं, सूरज की रौशनी में परवरिश पाते हैं पानी के गिरने से फलते-फूलते हैं, हवा से ज़िन्दा रहते हैं, लिहाज़ा पलने का तअ़ल्लुक़ हमारी रुह़ के अन्दर इस क़ायनात 'सृष्टि' के अंगों (मख़्लूक़) से बना।

अगर यह सही़ है तो मालिक कलिमा न भेजता, लेकिन यह ग़लत है यह बात समझ में नहीं आती, सही बात को समझाने के लिए अल्लाह ने कलिमा की बात को नबियों के साथ इन्सानों को सिखाने के लिए भेजा। सारे के सारे

नबी कलिमा **'ला इलाह इल्लल्लाहु'** के साथ आये क्योंकि कलिमा के अन्दर ही वह बात है जो इन्सानों की रुह़ के अन्दर लाइ़ल्मी अज्ञानता को निकालेगी। कलिमा में **'ला'** ही जिसका मतलब है 'नहीं'। किससे नहीं होता, ज़रा सोचें. ....एक तरफ़ अल्लाह है दूसरी तरफ़ उसकी बनी हुई मख़्लूक़ है अब किससे नहीं होता तो मख़्लूक़ से नहीं होता। मतलब यह है कि मख़्लूक़ से नफ़े और नुक़्सान का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है।

बनाई हुए वस्तुएँ मुह़ताज हैं–

यह इन्सान ज़रा ग़ौर करें कि उसकी बनाई हुई रचना, उसके बग़ैर नफ़ा और नुक़्सान नहीं निकाल सकती। Example मिसाल के तौर पर इन्सान की बनाई हुई हथौड़ी इन्सान के बग़ैर नफ़ा और नुक़्सान नहीं दे सकती यह इन्सान नफ़े का इरादा करता है किसी चीज़ या मशीन को बनाना चाहता है तो वह इसी हथौड़ी से मशीन को बना देता है अगर उसने इस हथौड़ी से नुक़्सान निकालने का इरादा बना लिया तो वह इसी हथौड़ी से मशीन को तोड़ देता है।

दिखाई यह देता है कि हथौड़ी मशीन को बना रही या हथौड़ी मशीन को तोड़ रही, लेकिन होता यह है कि वह इन्सान जो इस हथौड़ी को बनाने वाला है उसका इरादा उसकी बनी हथौड़ी से निकल रहा है। इस तरह़ बनी हुई चीज़ के अन्दर नफ़ा और नुक़्सान पहुँचाने की ताक़त नहीं है, नफ़ा और नुक़्सान उसके बनाने वाले से है। यह बात हमारे अन्दर बैठ जाए, चूंकि बात बचपन से ग़लत बैठी हुई है।

अनाज, फल, सब्ज़ी, ज़मीन, पानी, आग, हवाएँ और कुल क़ायनात अल्लाह की बनी हुई है। मख़्लूक़ के अन्दर उसका हुक्म (इरादा) चल रहा है, अगर अल्लाह इन्सानों की ज़िन्दग़ी को नफ़ा पहुँचाना चाहता है तो उसकी मख़्लूक़ जैसे-खाने पीने की चीज़ें, ज़मीन, हवा, पानी, दवाएँ उसके अन्दर उसने नफ़े का हुक्म रखा है, अगर नुक़्सान का, मौत को देने का हुक्म रख देता तो मौत आ जाती, इसी पानी को पीकर वह बीमार हो जाता है। इसी दवा को खाकर वह मौत को प्राप्त हो जाता है। यही ज़मीन हिल जाती है जिससे लोग

मर जाते हैं यही सूरज इतना तप जाता है कि उसकी गर्मी से लोग मर जाते हैं, दिखाई यह देता है कि इस क़ायनात की मख़्लूक़ से लोग मर गये हैं लेकिन होता ख़ालिक़ से, उसके बनाने वाले से है उसके इरादे से उसके हुक्म से यह सारी क़ायनात तो रहती है।

सूरज वक़्त से निकलता है, पानी बारिश वक़्त पर होती है, हवा चलती है, खाने पीने की चीज़ें रहती है, अनाज एफ़०सी०आई० में मौजूद है, दवा इन्जेक्शन सभी मर्ज़ के है, ज़मीन मौजूद है, फिर इन्सान क्यों मर जाता है?

अगर इसी क़ायनात की चीज़ों से ज़िन्दग़ी है तो वह सारी की सारी मौजूद हैं फिर इन्सान कैसे मरा ज़रा सोचें? क्योंकि यह सब मख़्लूक़ात हैं, अल्लाह की बनी हुई है, और बनी हुई चीज़ में बनाने वाले का इरादा चलता है, उसका हुक्म चलता है, और हुक्म दिखाई नहीं देता। जैसे- इन्सान का बनाया हुआ नोट (करेन्सी) जो रंग बिरंगा कलर्ड वाला कागज़ है, नहीं चलता बल्कि उसके अन्दर गवर्मेन्ट Govt. का हुक्म चलता। यदि गवर्रमेन्ट हुक्म निकाल दे, यूँ कहे कि 100 का नोट बन्द कर दिया तो फिर नोट नहीं चलेगा उससे फल, सब्ज़ी, कपड़े, दवा, ज़मीन ख़रीदी नहीं जा सकती क्योंकि हुक्म निकल गया है, हुक्म ही काम करने वाली ताक़त है। पावर आफ़ अटार्नी है, ठीक इसी तरह़ अल्लाह का हुक्म उसकी बनी हुई क़ायनात मख़्लूक़ात से चलता है और हुक्म दिखाई नहीं देता और होता हुक्म से है, ज़ाहिर सबब से नहीं।

क़ब्र के अन्दर सबसे पहला सवाल यही होगा कि **'मन रब्बुका'** पालने वाला किसे ठहराया। एक ग़ैर मुस्लिम की रुह़ के अन्दर क़ायनात की चीज़ें, ज़मीन, हवा, पानी सूरज, खाने-पीने की चीज़ें, दवाएँ से पलना बनता है, इसलिए वह दुनिया के अन्दर उन्हें अपना रब (पालने वाला) ठहरा देता है। हम देखते हैं कि वह ज़मीन की, सूरज की, नदी की, जानवर की, पेड़-पौधों की इ़बादत करता है जब उससे फ़रिश्ते पूछते हैं कि किसे रब ठहराया? पालने वाला किसे जाना? तो वह क़ायनात की चीज़ों को बताता है उसे पालने वाला ठहराता है चूंकि यह जवाब ग़लत है इसलिए नाकाम हो जाता है।

अगर एक मुसलमान की रुह़ के अन्दर भी यही बात है, क़ायनात की

चीज़ों से पलने का बना है तो वह भी क़ब्र में जवाब वही देगा जो ग़ैर मुस्लिम ने दिया इसलिए कहा जाता है कि क़ब्र आख़िरत की पहली मन्ज़िल है, जिसकी यह मन्ज़िल आसान हो जाए उसकी बाद वाली मन्ज़िल भी आसान हो जाएगी।

क़ब्र में इन्सान से ईमान के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा और मैदाने ह़श्र में इ़बादत, मामलात, के बारे में सवाल होंगे। अगर इस दुनिया में रुह़ के अन्दर कलिमे की बात, एक मालिक होने की बात, मख़्लूक़ से इन्कार की बात बनी तो क़ब्र में कलिमा ज़बान से निकलेगा और मन्ज़िल आसान हो जाएगी। हम दुनिया में इसलिए आये हैं कि रुह़ के अन्दर कलिमे की बात को उसके इ़ल्म में ठहरा दें, जिससे वह रुह़ ज़िन्दा कहलाएगी। इसलिए कहा जाता है कि ज़िक्र करने वाला ज़िन्दा और ज़िक्र न करने वाला मुर्दा है, दुनिया के अन्दर बच्चा पैदा हो अगर वह ज़िन्दा है जिस्म के साथ रुह़ को भी लाया है तो उसे दुनिया में घर मिलेगा दुनिया की हर चीज़ से नफ़ा उठाएगा, लोग उससे रिश्ता जोड़ेंगे। कोई कहेगा यह मेरा लड़का है, कोई कहेगा यह मेरा भाई है।

यह सब इसलिए कि छोटा बड़े को साथ लाया है, छोटे और बड़े का जोड़ लग कर आया है। दुनिया में जिस्म यही रह जाएगा और जान जाएगी, जान के अन्दर अगर कलिमे वाला इ़ल्म बना तो यह जान छोटी है और इ़ल्म बड़ा है, यह छोटे की बड़े का जोड़ बना तो यह रुह़ कलिमे की बात को कहेगी, इसका कलिमा की बात को कहना ही तो कलिमे की शहादत होगी। इसलिए कहते हैं क़ब्र में जो कलिमा मुराद है वह कलमा-ए-शहादत है।

दुनिया के अन्दर जो बच्चा पैदा हुआ है वह अगर जिस्म के साथ जान को न लाया तो वह मरा हुआ कहलाएगा, चूंकि छोटा जिस्म आया है और बड़े (रुह़) को नहीं लाया तो किसी घर में जगह नहीं मिलेगी, कोई दुनिया का नफ़ा ह़ासिल नहीं कर सकेगा कोई रिश्ता नहीं जोड़ेगा उसकी कोई क़ीमत नहीं होगी यहाँ तक कि ग़ुस्ल, कफ़न भी न पा सकेगा, इस दुनिया से रुह जाएगी और अगर उसमें जिहालत (अज्ञानता) बनी हुई (बनी हुई चीज़ से नफ़ा और नुक़्सान बना) तो यह रुह़ (मुर्दा) कहलाएगी, उसकी कोई क़ीमत न होगी।

कलिमे में दूसरा जुज़ (ह़िस्सा) है, **'इल्लल्लाह'** इसका मतलब है अल्लाह

ही है जिसकी इ़बादत की जाए, अल्लाह ही मालिक है, रब है, मालिक है जो करता धरता है।

दुनिया में हमने देखा है कि जो कोई किसी दुकान, खेत का मालिक होता है वह कुछ करते दखाई देता है, हुक्म देता रहता है और कर्मचारी काम करते रहते हैं, तो हमने यह देखा कि करने वाली ज़ात वाहि़द अल्लाह की है।

इस बात की 'तस्दीक के लिए हम अपने आप की ओर देखें क्योंकि अल्लाह ने हम से चीज़ें बनवाई, हम बनाने वाले हुए जो हमने बनाया वह हमारी बनी हुई है। हमारी बनी हुई रचना से अल्लाह की बनी हुई क़ायनात को समझना आसान और हम (इन्सान) से अल्लाह को समझना आसान है क्योंकि एक अल्लाह बनाने वाला है और अल्लाह ही के चाहने से यह इन्सान बनाने वाला बना, बनाने वाले से बनने वाला समझना आसान है।

थोड़ी देर के लिए हम सारे इन्सानों को एक ज़ात Unit मान ले, जब हमने देखा कि हम भी कुछ करते हैं, यह हाथ काम करने का, आँख देखने का, कान सुनने का, ज़बान बोलने का, पैर चलने का और दिमाग़ सोचने का काम करता है लेकिन यह जिस्म हो और रुह़ निकल जाए तो फिर इस जिस्म से कुछ नहीं होता है। पता चला कि यह रुह़ है जो करने धरने का काम करती है लेकिन हमसे कलिमे में करने वाली ज़ात अल्लाह को ठहराया है और हम जिस्म और जान दोनों मख़्लूक़ है और हमें जान (मख़्लूक़) से होता हुआ दिख रहा है, अभी हमारा कलिमा सही नहीं हुआ, पता चला कि इस रुह़ के अन्दर अगर इ़ल्म न हो तो वह भी कुछ नहीं कर सकती क्योंकि इ़ल्म रुह़ को ह़रकत देता है और रुह़ जिस्म को ह़रकत देती है और जिस्म से काम होता हुआ दिखाई देता है।

एक पागल के अन्दर जिस्म और रुह़ दोनों हैं, लेकिन कोई उसे अपनी दुकान, खेत में काम पर नहीं रखता क्यों? क्योंकि यह कुछ काम नहीं कर सकता। इसके अन्दर इ़ल्म नहीं ठहरता, पता लगा इ़ल्म ही है जो करता है। हम किसी Topic पर बोल रहे हैं, तो हमें इ़ल्म है इसलिए बोल रहे हैं, और हम किसी काम को कर रहे हैं तो हमें उसका इ़ल्म है इसलिए वह काम हम

कर रहे हैं। हम किसी बात को सुन रहे हैं तो उस बात या भाषा का इ़ल्म है तो सुन पर रहे हैं। हमें किसी मन्ज़िल पर जाना है तो हमें इ़ल्म है तो हम उस मन्ज़िल पर पहुँच रहे हैं।

एक बच्चे को हमने कहा कि देखो घड़ी में कितना बजा है? अगर उसे इ़ल्म है तो बता पाएगा कि कितना बजा है, अगर उसे इ़ल्म नहीं है तो नहीं बता पाएगा। फिर हमें इ़ल्म है हम उसे "इ़ल्म" देंगे कि देखो बड़ा कांटा इतने पर है और छोटा कांटा इतने पर होगा तो इतना बजेगा, यह इ़ल्म जब उस रुह़ के अन्दर ठहर जाएगा तब वही इ़ल्म घड़ी देखेगा और रुह़ को बताएगा और रुह़ जिस्म की ज़बान से हमें बताएगी। इस तरह़ देखना दिखाना, बोलना, सुनना सुनाना, चलना-चलाना, करना-कराना, सभी इ़ल्म में चला गया और यह रुह़ का डिब्बा बनकर रह गई, इसलिए आज जो नई-नई गाड़ियाँ, मोबाइल, बिल्डिंग दिखाई दे रही हैं सभी इ़ल्म की शक्लें हैं, अल्लाह ही ने हमें इन्सान बनवाया है क्योंकि इ़ल्म उसकी सिफ़त है और अ़लीम उसकी ज़ात है।

इ़ल्म से हो रहा है, यानी अल्लाह ही से हो रहा है वह जो चाहता है हमसे बनवाता है जो नहीं चाहता वह नहीं बनवाता। अल्लाह ने चाहा तो बड़े-बड़े हवाई जहाज़ बना दिये, नहीं चाहा तो एक बरग़द का बीज नहीं बना सके, इसलिए हम करने वाली ज़ात अल्लाह को ठहराएँ, हमारी नफ़ी हो हम सिर्फ़ ज़रिये के तौर पर इस्तेमाल होते हैं, मख़्लूक़ सबब के तौर पर इस्तेमाल होती है, करना धरना तो उसमें होता ही नहीं है। जैसे नोट में कलर्ड काग़ज़ तो सिर्फ़ सबब है चलने की ताक़त तो हुक्म में है, सह़ी यह होगा कि अल्लाह के पास जो इ़ल्म है।

एक है मारफ़त वाला, दूसरा उलूहियत वाला, उलूहियत वाला इ़ल्म अपनी चाहत को चाह लेने से पूरी कर लेता है, तद्बीर बरतने से पाक है, यह इ़ल्म अल्लाह ने किसी को नहीं दिया। हाँ, अपने को पहचानने वाला इ़ल्म ज़िब्रईल (अ़लै०) को दिया, यह इ़ल्म जब जिब्रईल (अ़लै०) की रुह़ के अन्दर ठहर गया तब इसी इ़ल्म ने आप (सल्ल०) की रुह़ के अन्दर इ़ल्म को ठहराया, जब आप (सल्ल०) की रुह़ के अन्दर इ़ल्म ठहरा तो उसी इ़ल्म ने ही सहाबाओं

की तर्बियत की।

अल्लाह ही इल्म सिखला रहे हैं, एक इल्म तो शैतान के पास भी है उसने फ़रिश्तों को देखा, जन्नत जहन्नम देखा, इसलिए इल्म भी एक डिब्बा है अगर उसमें अल्लाह की मुहब्बत न हो। मुहब्बत अस्ल है, अल्लाह से अगर मुहब्बत नहीं हो तो बन्दा-बन्दा नहीं, शैतान है। जब हम बन्दगी करेंगे, तो मुहम्मद वाली इत्तिबअ़ को पाएँगे।

आप (सल्ल०) ने 100 प्रतिशत बन्दगी करके दिखलाई, जब हम चल फिर कर इसकी दअ़वत देंगे, मालिक और मख़्लूक़ की पहचान का जो इल्म बन गया है उसकी दअ़वत देंगे तो रसूल वाली सिफ़ात आएगी।

आप (सल्ल०) ने 100 प्रतिशत वाले काम का हक़ अदा किया था। इस कारे नुबूवत वाले अ़मल के हो जाने पर हम अल्लाह ही को ज़िम्मेदार ठहराएँ और कहें कि या अल्लाह मैं मख़्लूक़ हूँ और मख़्लूक़ में करना धरना नहीं होता। यह अ़मल तो आप ने किया है जो ग़ल्तियाँ कोताहियाँ हुई हैं वह मुझ से हैं क्योंकि मैं माद्दे से बना हुआ हूँ। इस तरह यह कलिम-ए-इख़्लास पूरा होगा, इस पर अल्लाह हमें इत्मिनाने क़ल्ब देगा।

आप अपने आप को फिर से कलिमे के 'ला' में रख दे और इस तरह़ इख़्लास वाला कलिमा बनेगा। हम अल्लाह से यूँ कहें कि या अल्लाह मख़्लूक़ को मालिक ही क़ीमती बनाया करता है, मख़्लूक़ अपने आप में क़ीमती नहीं बनती। तूने मुझे क़ीमती बनाया है मैं तेरा एहसानमन्द हूँ। दअ़वत के काम का असल इन्सानों को मर्तबा-ए-एहसान तक पहुँचाना है। अब हमारे अन्दर यह बना है कि हम किस तरह़ उस क़ायनात के मालिक से जुड़ जाएँ जिससे हमारा मस्ला ह़ल हो जाए वह क्या चाहता है? किस बात पर किस काम के करने से ख़ुश या राज़ी होता है, वह अपनी मर्ज़ी ख़ुद ही बतलाए, हम अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं करेंगें अल्लाह ने अपनी मर्ज़ी नबियों के ज़रिये इन्सानों तक पहुँचाई जिसे अल्लाह का हुक्म कहा जाता है। वह नाम जिसके लेने पर वह ख़ुश होता है वह **'ला इलाहा इल्लल्लाह, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'** है।

इसके पढ़ने से वह ख़ुश होता है हमको अल्लाह ने बनाया है उसकी

सारी मख़्लूक़ ज़मीन, हवा, पानी, खाने पीने की चीज़ों को हम इस्तेमाल कर रहे हैं, उसने हमें लाखों की क़ीमत का जिस्म बना कर दिया है तो बदले में हम उस अल्लाह का नाम लें जिसकी चीज़ों को हम इस्तेमाल कर रहे हैं वही सीधा रास्ता है, कलिमा को उसने अपने ख़ुश होने का माध्यम बताया है, जब हम इस कलिमे को पढ़ेंगे तो वह अल्लाह ख़ुश होगा। इसका मतलब यह है कि वह ज्ञानी (अ़लीम) है, इल्म ज्ञान प्राप्त होगा। इल्म (ज्ञान) प्राप्त होने पर सह़ी और ग़लत दिखाई देता है। जितना सह़ी दिखाई देता है उतना ही ग़लत दिखाई देता है।

जो यह कहे कि मालिक ईश्वर की भक्ति को और उसके बन्दों को भी, तो हम कहेंगे कि अभी उसे सह़ी नहीं दिखा, उसे इल्म नहीं है क्योंकि ज्ञान आता तो वह कहता कि रचना और रचानकार मालिक और मख़्लूक़ बनाने वाला और बनी हुई चीज़ कभी बराबर नहीं होती।

ख़ालिक दाता Doner है, देता ही देता है। ख़ल्क रिणि Recepter क़र्ज़दार है, लिया ही लिया करता है, देने वाला और लेने वाला कभी बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह की नाफ़रमानी करने के लिए उसकी बेअदबी करने के लिए यह काफ़ी है कि उसकी भी इबादत करे और उसके मख़्लूक़ (रचना) की भी दोनों को बराबर-बराबर समझे। हम इन्सान और हमारी बनाई हुई कोई रचना, चीज़, आपस में बराबर नहीं हो सकती क्योंकि बनी हुई रचना, वस्तु, चीज़ हमारे बनाने से अस्तित्व (वजूद) में आई है। वह हम से हैं, हम उससे नहीं, वह मोह़ताज है हम मोह़ताज नहीं है। हमें अल्लाह को नाराज़ नहीं करना है उसके साथ किसी मख़्लूक़ को शरीक नहीं करना है उसके बराबर का उसका कोई पार्टनर नहीं है, क्योंकि बनी हुई चीज़, बनाने वाले की मुशीर नहीं हो सकती है, बेबस होती है।

कभी-कभी साथी यह सवाल कर देते हैं कि आत्मा परमात्मा का अंश है। इन्सान के अन्दर ईश्वर मौजूद है सभी अच्छे कार्य जो हमसे हो रहे हैं वह हमारे अन्दर वह ईश्वर है जो मौजूद है वह करा रहा है, बन्दों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है। यह बात कि ईश्वर का अंश हर इन्सान में मौजूद है, यह सही नहीं है, किसी भी चीज़, मख़्लूक़ का वजूद उत्पत्ति से आना दो तरह़ से

मुम्किन हुआ है।

पहला यह कि हमने किसी को पैदा किया, हम इन्सान एक आदमी एक ओ़रत ने मिलकर ईश्वर के चाहने से एक संतान औलाद पैदा हुई चूंकि औलाद में माता-पिता (माँ-बाप) का अंश ब्लड ख़ून लगा है जिसकी वजह से औलाद अपने (माँ-बाप) की सिफ़ात गुणों से समानता मिलेगी। औलाद का चेहरा माँ-बाप से मिलेगा। इन्सान का बच्चा इन्सान जैसा होगा यह सब इसलिए है कि उसमें अंश, ब्लड लगा है। जैसे- सूरज एक बहुत बड़ा ज़रिया है, रौशनी और गर्मी देने के लिए जब निकलता है तो रौशनी और गर्मी दोनों पैदा करता है। उस सूरज के सामने एक दिया, मोमबत्ती एक अंश के समान है। लेकिन उस मोमबत्ती के जलने पर वैसी ही रौशनी और गर्मी पैदा होती है जैसे सूरज के निकलने पर होती है, लेकिन सूरज के सामने यह मोमबत्ती की आग एक अंश के समान है। सूरज ऊर्जा Heat का एक बड़ा रूप है, मोमबत्ती की आग उसके सामने अंश मात्र है। जो गुण सिफ़ात सूरज की ऊर्जा में है, उसकी आग में है, वही सिफ़ात गुण मोमबत्ती की आग में है, दोनों में गुण सिफ़ात समान होते हैं।

सृष्टि की रचना-

अल्लाह ने हमको बनाया है, पैदा नहीं किया पूरी क़ायनात मख़्लूक़ात को बनाया है, सृष्टि की रचना की है, उसे रचा है, पैदा नहीं किया, जिस चीज़ को बनाया जाता है उसमें बनाने वाले का इ़ल्म तकनीक लगती है अंश नहीं लगता। इन्सान ने जितनी भी चीज़ें वस्तुएँ मशीन बनाई है अल्लाह ने उससे बनवाई है उसमें उसका इ़ल्म लगा है, इ़ल्म से बनी है, इ़ल्म की तस्वीर है इसलिए बनी हुई चीज़ बनाने वाले जैसे गुण सिफ़ात वाली नहीं हो सकती।

इन्सान अल्लाह का बनाया हुआ है लिहाज़ा यह अल्लाह के जैसा नहीं हो सकता। इन्सान के अन्दर डर लगता है, भूख लगती है, हाजत आवश्यकता लगती है। यह गुण सिफ़ात ईश्वर के अन्दर नहीं है।

हम इन्सान अपनी बनाई हुई कार को चलाना चाहते हैं तो उस कार के टायर के अन्दर प्रवेश मुन्तक़िल नहीं होते, हमारा ज्ञान इ़ल्म तक्नीक चलती है

हमारा सिस्टम काम करता है। अल्लाह का इ़ल्म उसकी क़ायनात मख़्लूक़ात के अन्दर चलता है वह मख़्लूक़ के अन्दर प्रवेश नहीं होता उसका इ़ल्म प्रवेश होता है अल्लाह ने अपने पहचनाने की निशानियाँ इन्सान के अन्दर रखी हैं। उस निशानियों से उसे पहचानने में आसानी होती है निशानियों में सिफ़ात गुण नहीं हुआ करते, गाय की फ़ोटो से गाय को पहचाना जाता है उसके फ़ोटो में उसकी निशानियाँ हैं। उसकी सिफ़ात गुण ज़रा भी नहीं है, गाय की फ़ोटो में दूध ज़रा भी नहीं है उसमें सिर्फ़ पहचाना जाता है।

इसलिए इन्सान के अन्दर अच्छे गुण व्यवहार अख़्लाक़ आ़माल उसके ईश्वर की निशानियाँ हैं, ईश्वर इन्सान के अन्दर प्रवेश मुन्तक़िल नहीं होता। इन्सान के अन्दर ईश्वर ख़ुदा की ऐन (true) सिफ़ात नहीं है, लोगों के अन्दर गुमराही आ जाती है कि वह फलाँ बन्दा जो अच्छे गुण वाला अच्छे अ़मल वाला है उसके अन्दर ईश्वर है, इसलिए उसकी इ़बादत आराधना शुरु कर देते हैं।

अल्लाह के नबी पैग़म्बर या बन्दे उसकी इ़बादत करते हैं। मैं पूछता हूँ कि क्या ईश्वर गायब है? फ़रार हो गया है जो आप उसकी जगह वैकल्पिक Objective रूप में बन्दग़ी करने लगे हैं।

जैसे- मिसाल के तौर पर आप मेडिकल की दुकान पर गये। आपने कहा फलाँ दवा दे दीजिए अगर दुकानदार के पास उस कम्पनी की दवा नहीं है तो वह कहता है यह दवा तो नहीं है, लेकिन उसकी वैकल्पिक, यह दूसरी दवा ले लो, यह भी वही काम करेगी चूंकि ईश्वर अनादि काल से और अनन्त काल तक रहेगा, वह फ़रार नहीं होता अतः उसकी जगह उसके रूप में किसी अन्य या किसी और बन्दे की इ़बादत आराधना ठीक नहीं है, ग़लत है यह मनमर्ज़ी की बात है। इस तरह से इन्सान गुमराह हो जाता है अपने जीवन के लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति से दूर हट जाता है।

पति-

जो पत्नी की सारी आवश्यकता ज़रूरतों को पूरा करता है, रहने के लिए घर, खाना, कपड़ा, दवाएँ, ज़ेवर वह सारी चीज़ें जो पत्नी की ज़रूरत है वह देता है और धर्म यह देता है कि मेरी अनुपस्थिति में मेरे अ़लावा ख़ाविन्द पति

का मुक़ाम किसी को मत देना यहाँ तक कि किसी और की तरफ़ मोहब्बत से देखना भी मत। अगर ख़ाविन्द वाला (पति वाला) दर्जा किसी को दे दिया तो एक मिनट भी मेरे घर में नहीं रहेगी। मेरे साथ किसी और को शरीक न करना। यह बड़ी ग़ल्ती है जिसे मैं (पति) माफ़ नहीं करुँगा। अगर खाना ठीक से नहीं बना, कपड़े ठीक से नहीं धुलते, घर की साफ़ सफ़ाई ठीक से नहीं होती...यह इतनी बड़ी ग़ल्ती नहीं है कि तुझे घर से बाहर निकालूँ। अल्लाह ने हमें बनाया और रहने के लिए मकान जिस्म दिया दुनिया की सारी मख़्लूक़ात इस इन्सान को नफ़ा पहुँचाने के लिए बनाई है। धर्म यह दिया कि देखो शिर्क नहीं करना मेरे अ़लावा मेरी जगह पर किसी अन्य की इबादत आराधना न करना। मअ़बूद आराध्य के रूप में किसी और को मेरे साथ शरीक या बराबर का ठहराया तो बड़ी ग़ल्ती होगी। मैं उस शिर्क वाली शिरकत वाली ग़लती को माफ़ नहीं करुँगा।

जैसे- तुम शिरकत को पसन्द नहीं करते वैसे मैं भी पसन्द नहीं करता कि कोई मेरे अ़लावा किसी को बराबर-बराबर समझे। देखो इन्सानों.....हमें अपनी आत्मा को सावित्री बनाना है। जैसे-एक सावित्री अपनी स्वामी के घर रहती है और फ़ाहिशा (बदलचन) औ़रत का कोई घर नहीं होता उसका स्वामी उसका पति ख़ाविन्द उसे घर से निकाल देता है। अगर आत्मा एक मालिक को स्वीकार करे तो वह मालिक के घर में स्वर्ग (में जन्नत) में रहेगी। यही तो कामियाबी है और हमें कामियाब होना है.....अल्लाह हमें कामियाब करे और शिर्क से बचाए। आमीन।

कलिमा **"लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाहि"** जिसके ज़रिये सही इ़ल्म (मार्फ़त वाला) हासिल किया जाता है। इस कलिमे को पढ़ेंगे यह कलिमा रुह़ को पाक साफ़ करता है। जैसे- जिस्म और कपड़े को साफ़ करने धोने के लिए साबुन होता है, लोहे को साफ़ करने के लिए आग की भट्टी, ठीक इसी तरह रुह़ और क़ल्ब को साफ़ करने के लिए कलिमा है। उसके ज़िक्र को ध्यान लगाकर अपने आप को हाज़िर करके करे। रुह़ पाक होगी उसकी पहचान यह होगी कि हमारे अन्दर गुनाह के कामों से कराहियत पैदा होगी यह रुह़ का पाक

होना है कि उसे गुनाह से लज़्ज़त नहीं बल्कि तक्लीफ़ पैदा हो रही हो। अब रुह़ जो एक बर्तन है पाक हो गया अब उसमें मार्फ़त वाला इ़ल्म रखा जाएगा। इ़ल्म ही तो हीरा है हीरे की वजह से डिब्बी की क़ीमत होती है। रुह़ डिब्बी है उसमें हीरा, इ़ल्म है जिसकी वजह से वह रुह़ क़ीमती बनेगी। जितना कि इ़ल्म याद होगा उतना अ़मल यक़ीन वाला होगा। यक़ीन की बुनियाद पर अल्लाह से मदद आएगी किसान को इ़ल्म है कि गेहूँ को ज़मीन में डालेंगे (बोओगे) तो गेहूँ उगेगा उसका 25, 30 गुना गेहूँ पैदा होगा। इस इ़ल्म के आने पर यक़ीन बना है यक़ीन के साथ अ़मल क़ुबूल होता है। अ़मल पर जो अल्लाह के वादे है वह पूरे होंगे बशर्ते बन्दा यक़ीन की मज़बूती रखे। दुनिया के अन्दर इम्तेह़ान है, मोमिन का अल्लाह इम्तेह़ान लेते हैं। इम्तेह़ान को पास करते-करते यह बन्दा अल्लाह के नज़्दीक हो जाता है।

इम्तिह़ान क्या है?

भूख, प्यास, बीमारी यह अल्लाह के हुक्म से लगती है। प्यास जो लगी है वह अल्लाह के हुक्म से लगी है। यह हुक्म अल्लाह ने बिना शिरकते ग़ैर के डायरेक्ट लगाया है।

इसमें इम्तेह़ान नहीं है अब हमसे पानी पिलवाया और जानना चाहा कि देखें बन्दे के अन्दर क्या बना पानी से प्यास का बुझाना बना या फिर इस पानी में हमारे प्यास के बुझने का हुक्म रखा था, उस हुक्म से प्यास का दूर होना बना। अल्लाह का एक हुक्म बिना शिर्कते ग़ैर के हैं, दूसरा हुक्म शिर्कत के साथ है, अगर बन्दे ने अल्लाह के हुक्मों को उसके सबब से अलग पहचाना और हुक्म को ही नफ़े और नुक़्सान का ठहराया तो कामियाब हो गया। अगर सबब को ज़िम्मेदार ठहराया तो नाकाम हो गया। हमारा हर अ़मल ईमान के साथ हो अगर हम बाज़ार में सब्ज़ी ले रहे हैं तो क़ीमत यह मान कर दें कि यह तो उस किसान की मज़दूरी है जिसने उस सब्ज़ी को बोया फिर जब ऊग आई तो काटकर यहाँ लाया, सब्ज़ी तो अल्लाह की पैदा की हुई है, किसान ने सब्ज़ी को पैदा नहीं किया सब्ज़ी की क़ीमत तो हमें अल्लाह को देना है। सब्ज़ी का मालिक

अल्लाह है, कपड़ा अगर ख़रीदा है तो उसमें कपड़े का मालिक अल्लाह दिखाई दे कि रेशम को तो अल्लाह ने ही पैदा किया है, हमने अगर ज़मीन ख़रीदी है तो बेचने वाला ज़मीन का मालिक दिखाई न दे बल्कि ज़मीन का रखवाला, पहरेदार दिखाई दे क्योंकि ज़मीन तो अल्लाह ने बनाई है उसका मालिक तो अल्लाह है। इस तरह़ हमारे अन्दर सही़ उ़सूल बने जोकि कलिमे के पढ़ने से बनेगा, लिहाज़ा इसे ख़ूब पढ़ना है, ख़ूब ज़िक्र करना है।

कलिमा एक बीज है जिसके अन्दर अनेकों दरख़्त मौजूद है। इसे रुह़ की ज़मीन में बोना है जब बो देंगे और उसकी मश्क़ (पानी देते रहेंगे) तन्हाई में कलिमे का ज़िक्र और चल फिर कर उसकी दअ़वत ही उसकी मश्क़ है। जिसमें यह पनपेगा इसका जो ख़ुलासा उतरे उसे चल फिरकर ख़ूब बोलना है। दअ़वत को देना है उसके बाद इल्म तकाज़ा करेगा। नमाज़, रोज़ः, ह़ज, ज़कात का उसे सीखकर पूरा करना है।

कुछ लोग यह कहते हैं कि सबब का होना ज़रूरी है बग़ैर सबब के काम नहीं बनता इसलिए क़ायनात को बनाया गया है। यह बात कुछ ईमान वाले भी कह जाते हैं। जो लोग इस बात को कहते हैं वह अल्लाह को मोह़ताज समझते हैं या अन्जाने में समझ रहे हैं। उनका कहना होता है कि जब तक हम खाना नहीं खाएँगे भूख कैसे दूर होगी क्योंकि भूख दूर करने का हुक्म खाने में रखकर आ रहा है इसलिए भूख को दूर करने के लिए खाने (भोजन) में सबब का होना ज़रूरी है।

रोज़ी के लिए दुकान, खेत, नौकरी ज़रूरी है। गेहूँ के उगाने के लिए गेहूँ का होना, चावल के उगाने के लिए चावल का होना, सब्ज़ी के उगाने के लिए सब्ज़ी का होना ज़रूरी है। गेहूँ से गेहूँ बनता है यानी गेहूँ के उगाने के लिए गेहूँ सबब के तौर पर ज़रूरी है। यह बात ग़लत है इसमें अल्लाह को मोह़ताज बना देते हैं। अल्लाह मोह़ताज नहीं है, मोह़ताज हम हैं हमे ईंट, पत्थर, लोहे, सीमेन्ट, रेत, लकड़ी की ज़रूरत पड़ेगी। हम किसी चीज़ को बनाना चाहते हैं किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती है।

अल्लाह किसी चीज़ को बनाना चाहते हैं तो उसे किसी भी कच्ची सामग्री

की या मटेरियल की ज़रूरत नहीं पड़ती। जैसे- अल्लाह ने सबसे पहले गेहूँ बनाया उसे बनाने के लिए उसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ी।

गेहूँ नहीं था गेहूँ बना दिया गया। जिस तरह़ पहला गेहूँ बनाने के लिए गेहूँ की ज़रूरत नहीं पड़ी अपनी क़ुद्‌रत से बनाया अपने हुक्म से गेहूँ को वजूद में लेकर आये। उसी तरह़ आज भी गेहूँ से गेहूँ नहीं बन रहे बल्कि अल्लाह अपनी क़ुद्‌रत से (हुक्म से) गेहूँ बना रहा है। जिस तरह़ पहला इन्सान अल्लाह ने अपने हुक्म से बनाया, उसी तरह़ आज भी इन्सानों से इन्सान पैदा नहीं होते बल्कि अल्लाह ही इन्सान बना रहा है। इन्सान के अख़्तियार में नहीं है कि वह कोई इन्सान पैदा कर दे। वरना वे लोग जो बेऔलाद हैं, बेऔलाद नहीं रहते।

यह क़ायनात अल्लाह के तसव्वुर कल्पना की तस्वीर है। जिस तरह़ तसव्वुर में किसी मह़ल को हम बनाते उसे बनाने में हमें किसी ईंट, रेत, गिट्टी, लोहे की ज़रूरत नहीं पड़ती। जब बनाने में किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ी तो रख रखाव में भी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। उस महल में लाइट लगा ले, पेड़ पौधे लगा ले, लग जाएँगे बल्ब जो लगाया है उसे जलाने में हमें बिजली नहीं देनी पड़ेगी क्योंकि उसे बनाने में जलाने से हमें किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ी तो बाक़ी रखने में भी किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

अल्लाह ने सूरज बनाया, बनाने में उसे किसी रा मटेरियल की ज़रूरत नहीं पड़ी तो उसे रखने में या मेन्टेनेन्स करने में भी किसी ईंधन की ज़रूरत नहीं पड़ती, करोड़ों सालों से सूरज चमक रहा है उसमें किसी तरह़ की कमज़ोरी नहीं आ रही, करोड़ों किलो कैलोरी ऊर्जा रोज़ाना निकल रही है लेकिन सूरज में कोई कमी नहीं आ रही। एक गेलेक्सी में करोड़ों अ़रबों सय्यारे हैं। सूरज इस दुनिया से कई गुना बड़ा है इसी तरह़ हज़ारों गेलेक्सियाँ है। एक वैज्ञानिक से पूछा गया कि आसमान में कितने तारे हैं? तो जवाब था कि पूरी दुनिया में जितने समुद्री किनारे हैं उसमें जितने रेताओं के कण हैं उतने सितारे हैं। हर सितारा सूरज से कई गुना बड़ा है और अ़रबों सालों से चमक रहा है।

उसमें कोई कमी नहीं आ रही है। यह सितारे तो हमें दिखाई देते हैं, सूरज तो हमें दिखाई देता है, अल्लाह जब इन सितारों को जो हमसे नहीं बल्कि

हमारी ज़मीन से कई गुना बड़े हैं जो हमसे कई गुना ज़्यादा उ़म्र के हैं। हमारी उ़म्र तो ज़्यादा से ज़्यादा 100 साल, लेकिन यह सितारे तो अ़रबों सालों से जीवित ज़िन्दा हैं हम तो तअ़दाद में छः अ़रब है यह तो अ़रबों खरबों है। अल्लाह उन्हें बिना किसी कोयला, पेट्रोल के उनकी चमक को बाक़ी रखे हुए है, उन्हें ज़िन्दा रखे हुए है। यह बात तो तस्दीक़ वाली है इसमें शक कैसा। तो फिर अल्लाह जिसने हमको बनाया बिना किसी रा मटेरियल के अपने हुक्म कुद्रत से वह बाक़ी भी रख सकता है, बिना कुछ खिलाये पिलाये।

वह अल्लाह मोह़ताज नहीं है कि हमारे एक बीता पेट के लिए, हमें ज़िन्दा रखने के लिए, खाना-पीना ज़रूरी समझे। यह तो इम्तिह़ान है कि हमें क्या दिखा, खाने-पीने की चीज़ें सबब दिखा या इसके अन्दर उसका हुक्म दिखा। हमें इस इम्तिह़ान में कामियाब होना है, जब हम कामियाब होंगे तो अल्लाह हमें जन्नत देंगे।

आपकी दुआओं का तालिब
मुह़म्मद मुस्तफ़ा क़ादूरी

मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी द्वारा लिखित पुस्तकें

नाम		भाषा	मूल्य
1. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	साइज़ 20x30/8	हिन्दी	200 रू
2. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	साइज़ 20x30/16	हिन्दी	110 रू.
3. क़ुर्आन का पैग़ाम (क़ुर्आन मजीद का आसान हिन्दी अनुवाद)	साइज़-20x30/32	हिन्दी	75 रू.
4. तफ़्सीर फ़ारूक़ी (पारा अम्म अनुवाद और व्याख्या)		हिन्दी	100 रू.
5. तफ़्सीर फ़ारूक़ी *(क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर पारा नं० १ से ५ तक)*		हिन्दी	200 रू
6. इस्लाम धर्म क्या है? *(क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में*		हिन्दी	110 रू.
7. जिहाद, आतंकवाद और इस्लाम		हिन्दी	90 रू.
8. हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया लेखन		हिन्दी	60 रू.
9. अन्तिम सन्देष्टा कब कहाँ और कौन		हिन्दी	90 रू.
10. जन्नत के ह़ालात और जन्नती (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)		हिन्दी	60 रू.
11. कुफ़्र और शिर्क की ह़क़ीक़त		हिन्दी	60 रू.
12. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें		हिन्दी	55 रू.
13. सह़ाबा का इस्लाम और उसके बाद		हिन्दी	45 रू.
14. अज़ान क्या है?		हिन्दी	20 रू.
15. आओ नमाज़ की ओर		हिन्दी	32 रू.
16. रोज़ः का हुक्म और उसके मसायल *(क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)*		हिन्दी	20 रू.
17. ह़ज और उ़मरा का आसान तरीक़ा *(क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)*		हिन्दी	15 रू.
18. ज़कात का हुक्म और उसके मसायल *(क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)*		हिन्दी	15 रू.
19. आपके सवालों का आसान ह़ल (भाग एक)		हिन्दी	40 रू.
20. झाड़, फूँक, जादू, टोना और तअ़वीज़,गंडे *(शरीअ़त की रोशनी मैं)*		हिन्दी	20 रू.
21. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)		हिन्दी	20 रू.
22. इस्लाम की बुनियादी मालूमात *(सवाल व जवाब की रोशनी में)*		हिन्दी	32 रू.
23. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सीरत *(सवाल व जवाब की रोशनी में)*		हिन्दी	18 रू.
24. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की पाकीज़ह ज़िन्दगी		हिन्दी	20 रू.
25. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और मीडिया लेखन		हिन्दी	90 रू
26. सूर-ए- फ़ातिह़ा की तफ़्सीर		हिन्दी	15 रू.
27. तौह़ीद की ह़क़ीक़त (क़ुर्आन व सुन्नत की रोश्नी में)		हिन्दी	30 रू.
28. पवित्र क़ुर्आन का सन्देश इन्सानी दुनिया के नाम		हिन्दी	15 रू.
29. इस्लाम धर्म तलवार से फैला या सदाचार से		हिन्दी	30 रू.
30. मोबाईल से सम्बन्धित मसायल *(शरीअ़त की रोशनी में)*		हिन्दी	10 रू.
31. अल्लाह के प्यारे नबी (सल्ल०) एक नज़र में		हिन्दी	10 रू.
32. इस्लाम?		हिन्दी	05 रू.
33. आख़िरी रसूल कहाँ, कब और कौन?		उर्दू	90 रू.
34. जिहाद, दहशतगर्दी और इस्लाम		उर्दू	90 रू.
35. इस्लाम धर्म क्या है? *(क़ुबूले ह़क़ के बाद इस्लामी कोर्स) कई भागो में*		उर्दू	90 रू.
36. इस्लाम में ग़ैर मुस्लिमों के हुक़ूक़		उर्दू	40 रू.
37. हिन्दू धर्म, फ़िर्क़े तन्ज़ीमें और इदारों का तआ़रुफ़		उर्दू	70 रू.
38. ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०) का ज़िक्र और मूर्तिपूजा की मुमानियत वेदों की दुनिया में।		उर्दू	20 रू.

नाम	भाषा	मूल्य
39. ग़ैर मुस्लिमों में तरीक-ए-दअ़वत उस्लूबे अंबिया की रोशनी में	उर्दू	60 रू.
40. क़ियामत तक के फ़ित्नें की {रसूल (सल्ल०) की पेशीनगोई की रोशनी में}	उर्दू	55 रू.
41. तलाक़ का इस्लामी तरीक़ा (क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)	उर्दू	40 रू.
42. अल्लाह की तरफ़ से रिज़्क़ की तक़्सीम और कमज़ोर तब्क़े की किफ़ालत	उर्दू	30 रू.
43. क़ुर्आन के मिसाली नमूने और लाज़वाल मोअ़जिज़ा	उर्दू	30 रू.
44. क़ुर्आन में इन्सान का मक़ाम और उस का आ़ला मक़्सद	उर्दू	30 रू.
45. आ़माल को बातिल करने वाली चीज़ें और नियत की अहमियत	उर्दू	30 रू.
46. इस्लामी क़ानून विरासत और मीरास की तक़्सीम	उर्दू	30 रू.
47. उम्मते मुह़म्मदिया की इ़ज़्ज़त का मेयार और बनी इस्राईल	उर्दू	30 रू.
48. ग़ैर मुस्लिमों से तअ़ल्लुक़ात और मज़हबी आज़ादी	उर्दू	30 रू.
49. इस्लाम में जिज़्या, ख़िराज और ज़िम्मियों के अख़्तियारात	उर्दू	25 रू.
50. क़ुर्आन के मुताबिक़ दौलत का इस्तेमाल	उर्दू	60 रू.
51. ज़कात और मसारिफ़े ज़कात *(क़ुर्आन व सुन्नत की रोशनी में)*	उर्दू	15 रू.
52. रसलुल्लाह (सल्ल०) की मुख़्तसर सीरत *(मुस्तनद कुतुबे सीरत की रोशनी में)*	उर्दू	20 रू.
53. रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सीरत के अनमोल मोती	उर्दू	18 रू.
54. रसूलुल्लाह (सल्ल०) का हुलिया मुबारक और आप (सल्ल०) की सुन्नतें	उर्दू	55 रू.
55. दाढ़ी की अहमियत (शरीअ़त की रोशनी में)	उर्दू	20 रू.
56. मदारिसे इस्लामिया के निसाब का तारीख़ी जायज़ा और हिन्दी ज़बान की ज़रूरत	उर्दू	18 रू.
57. रोज़ः, तरावीह़, सद्क़ः और एतिकाफ़ के एह़काम व मसायल *(शरीअ़त की रोशनी में)*	उर्दू	30 रू.
58. ह़ज और उ़मरा का मुकम्मल तरीक़ा *(शरीअ़त की रोशनी में)*	उर्दू	15 रू.
59. इस्लामी क्विज़ (सवाल व जवाब की रोशनी में)	उर्दू	35 रू.
60. अल्हिन्दूसिया मुबादिओहा व अक़ाइदोहा, मुनज़्ज़िमातुहा व अहदाफ़ुहा	अ़रबी	50 रू.
61. ज़िक्र मुह़म्मदिन (सल्ल०) फ़िल् वेद	अ़रबी	30 रू.
62. मुह़म्मद दी लास्ट प्रोफ़ेट अन्डर दी शेड ऑफ़ वेद, उपनिषद एण्ड पुराण	अंग्रेज़ी	40 रू.
63. मुह़म्मद (सल्ल०) एण्ड स्टेटस आफ़ वरशिप	अंग्रेज़ी	30 रू.
64. बेसिक टीचिंग आफ़ इस्लाम	अंग्रेज़ी	50 रू.
65. दी स्वॉड ऑफ़ इस्लाम	अंग्रेज़ी	30 रू.
66. अज़ान, ए कालिंग फ़ॉर ह्यूमेनिटी	अंग्रेज़ी	15 रू.
67. इस्लाम?	अंग्रेज़ी	07 रू.

हिन्दी में मुफ़्ती मुह़म्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी की अनुवाद की हुई पुस्तकें

68. मुन्तख़ब अह़ादीस (लेखक- ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ कान्धलवी रह०)	(हिन्दी)	60 रू.
69. क़ादियानियत नुबूवते मुह़म्मदी के ख़िलाफ बग़ावत (लेखक- इमामे ह़रम अब्दुल्लाह बिन अस्सुबय्यिल)	(हिन्दी)	10 रू.
70. अक़ीदतुल् वास्तिया (लेखक- अह़मद बिन अ़ब्दुल ह़लीम इब्ने तैमिया रह़०)	(हिन्दी)	40 रू.
71. सलासिले अरबअ़ (लेखक- ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी रह़०)	(हिन्दी)	06 रू.
72. दारे अरक़म का एह़सान इन्सानी दुनिया के नाम (लेखक- ह़ज़रत मौलाना सैय्यद अबुल ह़सन अ़ली नदवी रह़०)	(हिन्दी)	06 रू.
73. मानवता आज भी उसी की चौखट की मुहताज़ है (लेखक- मौलाना मुह़म्मद ह़सनी रह़०)	(हिन्दी)	05 रू.
74. यक्साँ सिविल कोड और महिलाओं के अधिकार *(लेखक- मौलाना मुह़म्मद राबेअ़ ह़सनी नदवी)*	(हिन्दी)	15 रू.
75. मालिक व मख़्लूक़ श्रेष्ठ कौन? *(विचारक- मुहम्मद मुस्तफ़ा क़ादरी)* *(तस्ह़ीह़ व तर्तीब- मु० मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी)*	(हिन्दी)	15 रू.

Literary Works By Mufti Mohd Sarwar Farooqui

Book's Name		***Language***	***Rs.***
1. Quraan ka Paigham (Asan Hindi Tarjuma)	Size 20x30/8	Hindi	200/-
2. Quraan ka Paigham (Asan Hindi Tarjuma)	Size 20x30/16	Hindi	110/-
3. Quraan ka Paigham (Asan Hindi Tarjuma)	Size-20x30/32	Hindi	75/-
4. Tafseer Farooqui *(Translation & Commentry of Para Amm)*		Hindi	100/-
5. Tafseer Farooqui *(Quraan Majeed ki Hindi Tafseer)*		Hindi	200/-
6. Islam Dharm kya Hai? *(Qubule Haque ke Baad Islami Course)*		Hindi	110/-
7. Jihad, Atankwaad Aur Islam		Hindi	90/-
8. Hindi Patrkarita Aur Media lekhan		Hindi	60/-
9. Antim Sandeshta Kab, Kahan, aur Kaun		Hindi	90/-
10. Jannat Ke Halat Aur Jannati *(Quraan Aur Sunnat ki Roshni mein)*		Hindi	60/-
11. Kufr Aur Shirk ki Haqeeqat		Hindi	60/
12. Rasulullah (SAW) ka Huliya Mubarak aur Aap (SAW) ki Sunnten		Hindi	55/-
13. Sahaba ka Islam Aur Uske Baad		Hindi	45/-
14. Azan Kya Hai?		Hindi	20/-
15. Aao Namaz ki Our		Hindi	32/-
16. Roze ka Huqm Aur Uskay Masail *(Quraan Our Sunnat ki Roshni Mein)*		Hindi	20/-
17. Haj wa Umra ka Aasaan Tariqua *(Quraan Our Sunnat ki Roshni Mein)*		Hindi	15/-
18. Zakat ka Hukm Aur Uskay Masail *(Quraan Our Sunnat ki Roshni Mein)*		Hindi	15/-
19. Apke Sawalon ka Asan Hal (Part-1)		Hindi	40/-
20. Jhaad, Phook, Jadoo, Tona Aur Taweez Gande *(Shariat ki Roshni Mein)*		Hindi	20/-
21. Dhadhi ki Ahmiyat Shriat ki Roshni Mein		Hindi	20/-
22. Islam ki Buniyadi Maloomat *(Sawal Wa Jawab ki Roshni Mein)*		Hindi	32/-
23. Rasoolullah *(SAW)* ki Seerat *(Sawal Wa Jawab ki Roshni Mein)*		Hindi	18/-
24. Rasoolullah *(SAW)* ki Pakiza Zindagi		Hindi	20/-
25. Adhunik Hindi Vyakran Aur Media Lekhan		Hindi	90/-
26. Sooreh Fatiha ki Tafseer,		Hindi	15/-
27. Tauheed Ki Haqeeqat *(QuranWa Sunnat ki Roshni Mein)*		Hindi	30/-
28. Pavitra Quraan ka Sandaish, Insani Duniyan ke Naam		Hindi	15/-
29. Islam Dharm Talwar Se Phiali Ya Sadachar Se		Hindi	30/-
30. Mobial Se Sambandhit Masail *(Shrait ki Roshni Mein)*		Hindi	10/-
31. Allah Ke Pyare Nabi *(Saw)* Ek Nazar Mein		Hindi	10/-
32. Islam?		Hindi	05/-
33. Akhri Rasool Kahan, Kab Aur Kaun		Urdu	90/-
34. Jihad, Dahshatgardi Aur Islam		Urdu	90/-
35. Islam Dharm Kya Hai? *(Qubule Haque ke Baad Islami Course)*		Urdu	90/-
36. Islam Mein Gair Muslimoon ke Huquq		Urdu	40/-
37. Hindu Dharm, Firke, Tanzeemun aur Idaron ka Taaruf		Urdu	70/-
38. Hazrat Muhammad (SAW) ka Zikr aur Murtipuja ki Mumaniyat Vaidon ki Duniya mein		Urdu	20/-
39. Ghair Muslimon mein Trique Dawat Uslube Ambiya ki Roshni mein		Urdu	60/-
40. Qiyamat tak ke Fitne *(Rasool Saw ki Peshangoin ki Roshni Mein)*		Urdu	55/-
41. Talaq ka Islami Tareeqah *(Quran Aur Sunnat ki Roshni Mein)*		Urdu	40/-
42. Allah ki Taraf se Rizq ki Taqseem *(Aur Kamzor Tabke ki kifalat)*		Urdu	35/-
43. Quran ke misali Namooney Aur Lazawal Mojizah		Urdu	30/-
44. Quran mein Insan ka Maqam Aur Us ka Aala Maqsad		Urdu	30/-
45. Amaal ko Batil karne wali Cheezeh Aur Niyat ki Ahmiyat		Urdu	30/-

Book's Name	*Language*	*Rs.*
46. Islami Qanoon Virasat Our Meeras ki Taqseem	**Urdu**	**30/-**
47. Ummate Muhammdia ki Izzat ka Meyar Our Bani Israeil	**Urdu**	**30/-**
48. Gair Muslimoon se Talluqat Aur Mazhabi Azadi	**Urdu**	**30/-**
49. Islam Mein Jizya, Khiraj Aur Zimmiyou ke Aktiyarat	**Urdu**	**25/-**
50. Quran ke Mutabik Daulat ka Istemal	**Urdu**	**60/-**
51. Zakat Aur Masarif-e-Zakat (Shariat ki Roshni Mein))	**Urdu**	**15/-**
52. Rasoolullah ki Muqhtasar Seerat *(Mustanad kutub seerat ki Roshni Mein)*	**Urdu**	**20/-**
53. Rasoolullah *(SAW)* **ki Seerat Ke Anmol Moti** *(Sawal Wa jawab ki Roshni mein)*	**Urdu**	**18/-**
54. Rasulullah *(SAW)* **ka Huliya Mubarak aur Aap** *(SAW)* **ki Sunnten**	**Urdu**	**55/-**
55. Dhadhi ki Ahmiyat (Shriat ki Roshni Mein)	**Urdu**	**20/-**
56. Madaris–e–Islamia ke Nisab ka Tariqhi Jayza Aur Hindi Zaban ki Zaroorat	**Urdu**	**18/-**
57. Roza, Taraveeh, Sadqa Aur Etikaf ke Ahkam Wa Masail *(Shariat ki Roshni Mein)*	**Urdu**	**30/-**
58. Haj Aur Umra ka Mukammal Tareeqa *(Shariat ki Roshni Mein)*	**Urdu**	**15/-**
59. Islami Quiz *(Sawal Wa Jawab ki Roshni Mein)*	**Urdu**	**35/-**
60. Alhindusiya, Mabadioha wa Aquaiduha, Munazzimatuha wa Ahdafuha	**Arbi**	**50/-**
61. Zikr Muhammadin *(SAW)* **Fil Almil ifyad wa Mustankarul wasuniyatofiha**	**Arbi**	**30/-**
62. Muhammad the last Under the shade of Veda, Upnishad & Puran	**English**	**40/-**
63. Muhammad (Saw) & Status of Worship	**English**	**30/-**
64. Basic Teachin of Islam	**English**	**50/-**
65. The Sword of Islam	**English**	**30/-**
66. Azan, A Calling for Humanity	**English**	**15/-**
67. Islam?	**English**	**07**

Translated into Hindi by: *(Mufti Muhammmad Sarwar Farooqui)*

68. Muntakhab Ahadees *(Writer:- Hazrat Maulana Muhammad Yusuf kandhalwi Rah)*	**Hindi**	**60/-**
69. Quadiyaaniat Nuboowat ke Khilaf Baghawat *(Writer: - Imam-e-Haram Abdullah Assubayil Sb.)*	**Hindi**	**10/-**
70. Aqeedatul Vastia *(Writer: -Ahmad bin Haleem Ibne Taimiya (Rah)*	**Hindi**	**40/-**
71. Salasile Arbaw *(Writer: - Maulana Abul Hasan Ali Nadwi)*	**Hindi**	**06/-**
72. Dar-e-Arqum ka Ahsan Insani Dunya Par *(Writer: - Maulana Abul Hasan Ali HasaniNadwi)*	**Hindi**	**06/-**
73. Maanawta Aaj Bhi Usi Chaukhat ki Muhtaaj Hai *(Writer: - Maulana Muhammad Hasani)*	**Hindi**	**05/-**
74. Yaksa Civil coad Aur Mahilaou ke Adhikar *(Writer: - Maulana Rabey Hasni Nadwi)*	**Hindi**	**15/-**
75. Malik Wa Makhlooq Shresth Kaun? *(Vicharak: - Mohd Mustafa Qadri) (Tasheeh wa Tarteeb: - Mufti Mohd Sarwar Farooqui Nadwi)*	**Hindi**	**15/-**

Publisher & Distributors

Jamiat Payam-E-Amn

Tagore Marg, Daliganj, Lucknow-226020 U.P. (India)
Website: www.islamicjpamn.com
Mobile– 0091– 9918194339, 9984490150
Phone No. 0091–0522–2740942– Phone & Fax– 0522–2741906
E- Mail–jpa_lko@ yahoo.com, siddiquilko@yahoo.com

अन्तिम सन्देष्टा

?

कहां **कब**

और कौन

एम० एम० सरवर फ़ारुक़ी नदवी
(एम० ए० व आचार्य)

"वेद, पुराण, उपनिषद, बौद्ध, तौरेत, इन्जील, पारसी, अ़रब कवि, भारतीय कवि, विशेष रूप से तुलसीदास जी, कबीरदास जी की वाणियों सहित गुरू नानक जी की वाणियां तथा इतिहासकारों, वैज्ञानिकों और पवित्र क़ुर्आन की दृष्टि में, ह़ज़रत मुह़म्मद (सल्ल०)।"

पहली बार

क़ुर्आन का पैग़ाम

मूल अ़रबी से हिन्दी में

क़ुर्आन मजीद की हिन्दी तफ़्सीर

मुफ़्ती मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

यह क़ुर्आन मजीद के पाँच पारे की तफ़्सीर है, जो आसान हिन्दी भाषा में लिखी गई है जिसे मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम सभी लोग समझ सकते हैं।

इस में सबसे पहले सूरः नाज़िल होने की वजह और पूरी सूरः का संक्षिप्त परिचय कराते हुए उसकी फ़ज़ीलत पर रोशनी डाली गई है फिर लगभग दस-दस आयतों या कुछ कम ज़्यादा मज़मून के ह़िसाब से तर्जुमः और मुकम्मल तफ़्सीर और उससे सम्बन्धित मसायल और नई-नई तह़क़ीक़ात के साथ हमारे कुछ भाईयों को जिन आयतों पर एतिराज़ होता है उन के जवाबात भी अच्छे ढंग से दिये गये हैं।

इस तरह़ मूल अ़रबी से हिन्दी में इस तरह़ की तफ़्सीर पहली बार आ रही है, जो तमाम इन्सानों के लिए बहुत फ़ायदेमन्द है।